International Journal of Multidisciplinary Horizon

ISSN: **3049-2017**
IJMH 2026; 3(2): 266-268
© 2026 IJMH
www.themultijournal.com

Received: 28-03-2026
Accepted: 13-04-2026
Publish : 14-04-2026

निहारिका धाकड़
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,आगरा

शोध निर्देशिका
डॉ. अनीता
संस्कृत विभाग, कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान, आगरा

Correspondence:
निहारिका धाकड़
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,कला संकाय,
दयालबाग शिक्षण संस्थान,आगरा

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में सौन्दर्यबोध

निहारिका धाकड़, डॉ. अनीता

शोधसार (Abstract)

यात्रा शब्द की व्युत्पत्ति **'या'** धातु में **'ष्ट्रन'** प्रत्यय करके हुई है। भ्रमणशील मानव ने साहित्यिक मनोवृत्ति से प्रेरित होकर विशिष्ट स्थलों की यात्राओं से उत्पन्न अनुभवों को काव्यात्मक रूप में लिपिबद्ध किया। संस्कृत साहित्य में यही परंपरा 'यात्राकाव्य' रूप में समृद्ध हुई। आधुनिककाल में यात्राएँ केवल भौगोलिक भ्रमण तक सीमित न रहकर अनुभव, संवेदनाएँ एवं सौंदर्यबोध का गहन चित्रण प्रस्तुत करती हैं। साहित्य में सौंदर्यबोध प्रकृति के सौंदर्य, मानवीय अनुभवों की गहराई एवं आत्मिक अनुभूतियों के रूप में सम्भूत हुआ। काव्यशास्त्र में सौंदर्य का अनुभव मुख्यत: रस, अलंकार, छंद एवं ध्वनि के माध्यम से प्रविष्ट होता है। संस्कृत साहित्यानुरागियों के हृदयसम्राट् अभिराज राजेन्द्र मिश्र अद्भुत व्यक्तित्व एवं विलक्षण प्रतिभा के धनी रहे हैं। उनके यात्राकाव्यों में वर्णित प्रकृति का सौन्दर्य, मानवीय अनुभवों की गहराई एवं आत्मिक अनुभूतियाँ मानव को उत्कृष्ट अनुभूति प्रदान करती हैं।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के यात्राकाव्यों में प्रकृति सजीव पात्र के रूप में बाह्य एवं आध्यात्मिक सौंदर्य का अनुभव करती है। प्रकृति के अद्भुत दृश्य का वर्णन करते हुए वह कहते हैं, कि 'न्यान' ग्राम के श्मशान में न तो मृत शरीरों को जलाया जाता है और न ही उन्हें दफनाया जाता है, किंतु श्मशान में उपस्थित वृक्षों की महिमा के कारण अग्नि और गंध स्वत: ही धीरे-धीरे समाप्त हो जाती है-

"दक्षिणे खलु यत्तीरे ग्रामष्ट्रन्याननामकः।
शवा यत्र न बाह्यन्ते निखन्यन्तेऽथवा भुवि।।"[1]
"श्मशानवृक्षमाहात्म्यान्निर्गन्धा निरुपद्रवाः।
शनैः शनैः प्रलीयन्ते प्रकृत्यैव परासवः।।"[2]

साथ ही वह हिमाचल प्रदेश की भव्यता के विषय में बताते हैं, कि हिमाचल प्रदेश में प्रकृति सत्यं, शिवं, सुंदरं के स्वरूप में विराजमान है। यह स्थल पक्षियों की मधुर ध्वनियों एवं कस्तूरी मृगों की उपस्थिति से आकर्षक बना हुआ हैं। यहाँ के वन क्षेत्र हरे भरे तथा झरनों की जलधाराएं प्रकृति के मनोरम दृश्य को प्रस्तुत करती है-

"क्वचिच्छिलासञ्चयसिद्धदेहा-
दभ्रंल्लिहोत्तुङ्गतयाऽनिरीक्ष्यः
क्वचिन्निरीक्ष्यस्सहजं वनाली-
हरीतिमस्निग्धतया मनोज्ञः।।"[3]

बालीद्वीप की पूर्व दिशा में स्थित मेरु पर्वत अपने शिखर से आकाश को स्पर्श करता हुआ मानव जीवन को विशिष्ट उन्नति में भी सहज रूप से कार्य करने का सन्देश देता है। देवताओं और दानवों दोनों द्वारा पूजित यह पर्वत चमेली के पुष्पों से सुगंधित, वनों से रमणीय एवं केले के पेड़ों से अलंकृत रहता है। यहाँ के निवासी अपने सांस्कृतिक एवं पारंपरिक नाट्यरूपों को जीवित रखते हुए, अपनी भूमि के सुंदर दृश्य का आनंद लेते हैं-

"समुच्छ्वसितचाम्पेयामोदभारविभङ्ग गुरम्।
नारिकेलवनीरम्यं कदलीषण्डमण्डितम्।।"[4]

लद्दाख के समीप इरावती, वितस्ता, चंद्रभागा, विपाशा, शतद्रु एवं सरस्वती नदियाँ सिंधु नदी को पोषित तो करती ही हैं साथ ही इनका प्रवाह हमें जीवन जीने के लिए निरन्तर प्रयास का संदेश देता है। सिंधु नदी का जल निर्मल होने के कारण इस स्थान को अपनी स्वच्छता के लिए जाना जाता है-

"इरावती वितस्ता च चन्द्रभागा विपाशिका।
सन्ति यस्याः सहायिन्यः शतद्रुश्च सरस्वती।।"[5]

कविवर अपनी विमान यात्रा का वर्णन करते हुए कहते हैं, कि विमान से देखने पर आकाश के ऊँचे-नीचे स्थान का रंग नीला दिखाई देता है। बादलों की मोटी परतों के बीच विमान शरद ऋतु के मौसम में कश्मीर की सीमा को पार करते दिखाई देता है तथा विमान के नीचे अनगिनत सफेद बादल दूर्वा घास के समान चलते हुए प्रतीत होते हैं। उनकी गति में मेष और बकरियों के बच्चों जैसी हलचल हुआ करती है-

"विमानाधस्तले कीर्णा असंख्या श्वेतवारिदाः।
दूर्वास्थल्यामभासन्त चरन्तो मेषशावकाः।।"[6]

डेन्पसार के पूर्व में सानुर, दक्षिणदिशा में नूसाबुआ और पश्चिम में समुद्र तटों की लहरों का रेत से टकराव जहाँ एक ओर अदम्य संघर्ष, जीवन की अस्थिरता एवं सृष्टि के रहस्यों को दर्शाता है। यह स्थान प्रेमी जोड़ों और पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। सानुर पर सूर्योदय और कुटा के सूर्यास्त को देखने के लिए प्रतिदिन हजारों लोग यहाँ आते हैं-

"सानुरे सूर्यसम्पातं सूर्यास्तं च कुटाम्बुधौ।
प्रत्यहं द्रष्टुमायान्ति पौराश्चापि सहस्रशः।।"[7]

भिवानी नगर के वरदेश्वर नामक मंदिर के प्रांगण में स्थित सिंहद्वार अत्यधिक शोभनीय है तथा उत्तरदिशा में पंक्तिबद्ध ग्रह भक्ति में अनुशासन एवं सौंदर्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखते हैं। मंदिर के भीतर सभामंडप ध्वनिवर्धक यंत्रों से सुसज्जित है-

"आस्थानमण्डपं रम्यं वचोयन्त्रसमन्वितम्।
यत्रोदितं हि वक्तव्यं कोणे-कोणे निशम्यते।।"[8]

मजबूत किले से घिरा कौबेर्या स्थल हमें जीवन के गूढ़ रहस्यों को समझने एवं आत्मिक उन्नति की ओर बढ़ने की प्रेरणा दिया करता है। यहाँ निवास हेतु बनाए गए कुटीर ध्यान एवं शान्ति की दृष्टि से अत्यंत सुविधाजनक है। इस स्थल की स्थापत्य कला और संरचना अत्यधिक सुंदर है-

"प्राकारपरिखायुक्तं धारायंत्रादिभूषितम्।
गोपुरत्रयसंश्लिष्ट मण्डपैर्बहुभिर्वृतम्।।"[9]

कवि शारदा मंदिर के अतीत के विषय में बताते हुए कहते हैं, कि इसकी अग्नि सात दिन तक जलती रही। इस अग्नि से उत्पन्न आकाश में फैला हुआ ज्ञान और धर्म हिमालय की तरह प्रबल तथा विवेक और समझ गहरे समुद्र में निहित हुआ-

"आकाशविततं ज्ञानं धर्मो हिमिगिरिप्रभः।
विवेकस्सिन्धुगम्भीरो बान्धव्यश्च दिगास्तृतम्।।"[10]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र का मानना है, कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संग्रह नहीं अपितु मन की शांति एवं धैर्य के साथ गहन चिंतन करने की कला भी है। नेपाल में स्थित चिरस्थायी सभ्यता के ज्ञानद्वीप प्रथम विश्वविद्यालय की स्थापना महाराज त्रिभुवन की स्मृति में तथा द्वितीय विश्वविद्यालय राजा महेंद्र के संरक्षण में स्थापित किया गया। यह विश्वविद्यालय वाराणसी के श्रेष्ठ विश्वविद्यालय की समकक्षता करता हुआ मानव को बौद्धिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक स्तर पर समृद्ध करता है तथा उसे आत्मनिर्भर एवं संघर्षशील बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान भी देता है-

"सर्वात्मनाऽनुहरते वाराणसेयमुत्तमम्।
विश्वविद्यालयश्चायं पाठ्यक्रमपरीक्षणैः।।"[11]

गिलिमानुक नगर का वर्णन करते हुए वह कहते हैं, कि जीवन के इस शिक्षालय में संतुलन, संघर्ष एवं सह अस्तित्व का प्राकृतिक सौंदर्य के साथ अद्भुत तालमेल रहता है। गिलिमानुक के जंगल बालकों की मासूमियत और नटखटपन को प्रकट करते है। राजमार्ग से जुड़े स्थान पर तंत्र शक्तियों से युक्त शक्तिशाली साधना स्थल स्थित है। इस नगर में समृद्ध केंद्र एवं वाटिकाएं, बाग-बगीचे और सुंदर तोरणद्वार है, जो इसकी भव्यता को बढ़ाते हैं-

"जेम्बरानकमिश्रर्या मुख्यकेन्द्रमिदं शुभम्।
वाटिकोद्यानचैत्यादिमण्डितं मञ्जुतोरणैः।।"[12]

गेल्गाल नामक स्थान रेशम निर्माण एवं वस्त्र उत्पादन के लिए प्रसिद्ध था। यहाँ कुशल चित्रकार और कारीगर निवास करते थे, जो अपने कार्य में निपुण थे। इस भू-भाग के बच्चे और युवा विभिन्न प्रकार के खेल खेलते थे और अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते थे। वहाँ प्रत्येक घर में रंगकार्य, बनाई और कलात्मक लेखन का काम होता था तथा इस स्थान की दीवारें और वस्त्र सुंदर चित्र और कहानियों से सुसज्जित थी-

"गृहे-गृहे कुविन्दत्वं दृष्टिप्रसारबन्धनम्।
रंगकर्मयुतालेख्यं ककवीनकथाश्रितम्।।"[13]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र शिवरात्रि महोत्सव के विषय में बताते हुए कहते हैं, कि यह महोत्सव अपने दर्शनमात्र से ही भक्तों के मन में विशेष उत्साह उत्पन्न करता है। शिवरात्रि के अवसर पर वरदेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन से सभी पाप नष्ट हो जाया करते हैं और जन्म का उद्देश्य सिद्ध हो जाता है।

"तद्दिव्यलिङ्ग सम्प्रेक्ष्य शिवरात्रौ विकस्वरम्।
दुरितानि विनष्टानि जन्म जातं सदर्थितम्।।"[14]

तथा वह संघर्षमय जीवन की आपसी सहयोग भावना को बताते हुए कहते हैं, कि गांव में रहते हुए उनकी मां ने आकाश में पक्षियों के समान विमान को आते जाते देखा था। अब उनकी मां पहली बार गांव को ऊपर से देख रही थी-

"अग्रहारे स्थिता नित्यं व्योमगं खगमुत्तमम्।
ददर्श यान्तमायान्तं दिवसेषु सचीत्कृतम्।।"[15]

वैशाली नगर के ग्रामवासी अपने हाथों से कार्य करते हुए पारंपरिक नित्य करते थे और भूमि के सौंदर्य में रमणीय आनंद का

अनुभव करते थे। ग्रामीण महिलाएं गांव के रहन-सहन में गाने गाती और नृत्य करती थी, वहीं कुटिलधारी वाले पुरुष जो खुद को कागज की परत से ढकते हुए आनंद से भरे गीत गाते थे-

'कौपीनवृत्तमध्याङ्गा हस्तोल्लासितयष्टिकाः।
आनन्दतटिनीमग्ना मानसे कुतुकं दधुः'।।[16]

राजा भोज के दुर्ग के पूर्वी भाग में न्यायशाला थी। सत्य एवं धर्म की रक्षा के केन्द्र में विशाल आंगन, चमकदार खंभे और रत्नजड़ित गलियारे थे। यह न्यायशाला स्थापत्यकला एवं उत्कृष्टता का प्रमाण थी, जिसे देखकर व्यक्तिजन शिल्पकार की रचनात्मकता और क्षमता की सराहना करता थे-

"प्राच्यां स्थाणोर्निवेशाद् बृहदजिरवती न्यायशाला विशाला
रथ्यावीथीप्रतोलीमणिमयवलभीस्तम्भवेदीविभक्ता।
दर्शं दर्शं यदीयां स्थपतिकरकलाचातुरीं त्वष्टृऋशिल्पेऽ
श्रद्धा जागर्ति नोऽद्धा तुलयितुमनसो रूपदक्षस्य कस्य??"[17]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र कहते हैं, कि देववाणी यदि अंग्रेजी भाषा के प्रभुत्व में जाती है तब वह विजिगीषुता की स्थिति में आ जाएगी परंतु यदि मानव अब भी प्रयत्नशील नहीं होता है तो देववाणी नष्ट हो जाएगी। इससे केवल एक भाषा का अंत ही नहीं होगा अपितु एक संपूर्ण सभ्यता के ज्ञान, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों का भी ह्रास होगा-

"प्रथमा विश्ववारा या संस्कृतिर्भुवि भारते।
मधुवादा मधुस्वादा सृष्ट्यादौ हि समुद्यथौ।।"[18]

समाज और राष्ट्र के प्रति निष्ठा ही सच्ची वीरता है। जो व्यक्ति समाज की भावनाओं को अनदेखी करता है, उसका विनाश अवश्यंभावी है और इसे विधाता भी टाल नहीं सकते। जो राष्ट्रभावना को तुच्छ मानता है, उसका समाज में अस्तित्व नहीं रहता और वह धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है-

"समाजाभिमतं पूतं यो जनः समुपेक्षते।
विनाशस्तस्य दुर्वारो विधात्राऽपि न वार्यते।।"[19]
"समाजश्चापि यो राष्ट्रभावनामवमन्यते।
निश्चप्रचं प्रयात्येव शनकैर्नामशेषताम्।।"[20]

अभिराज राजेन्द्र मिश्र कहते हैं, कि राजनीति किसी भी राष्ट्र की रीढ़ होती है। बंगभूमि की बिखरी हुई राजनीति व्यवस्था का वर्णन करते हुए वह कहते हैं, कि यहाँ कार्य की कोई दिशा नहीं है। जब नीति में कोई निष्ठा नहीं होती, तो प्रगति और उद्देश्य में कोई सफलता नहीं मिला करती। जिससे समाज में अराजकता, भ्रष्टाचार एवं अस्थिरता का जन्म होता है। असंगठित शासन में अन्याय का शिकार समाज की कमजोर वर्ग बना करते हैं किंतु दीर्घायु और समृद्धि केवल शौर्य और धन से नहीं मिलती है। वह ज्ञान कला और ईश्वर की पूजा से प्राप्त शुद्ध मन द्वारा प्राप्त होती है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र कहते हैं, कि जब तक पवित्र नगरों, नदियों और पर्वतों का वर्णन किया जाता है। तब तक भारतदेश देववाणी से अभिसंस्कृत है। वह अखंड रहेगा। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है जैसे घास की पत्तियां बिना किसी रूकावट के बढ़ती है, वैसे ही देववाणी के प्रभाव से भारत का कल्याण और विकास निरंतर होता रहेगा।

"तावद्धि भारतं राष्ट्रं देववाणीसमन्वितम्।
स्थास्यत्यखण्डितं नूनं नात्र कार्या विचारणा।।"[21]
"उत्तरोत्तरमुच्छिन्ना वर्धन्ते हि कुशा यथा।
वृद्धिमेष्यति कल्याणी देववाणी तथैव नः।।"[22]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है, कि अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने अपने यात्राकाव्यों में विविध स्थलों के वर्णन के साथ उन स्थलों से जुड़े भाव, दर्शन एवं मानवीय जीवनमूल्यों को भी उजागर किया। उन्होंने यात्राकाव्यों में प्रकृति, स्थापत्य एवं समाज सभी के सौंदर्य को भावगत एवं दार्शनिक दृष्टि से प्रस्तुत करके संस्कृत साहित्य में सौंदर्यबोध के नवीन आयाम प्रदान तो करते ही हैं, साथ ही यात्राकाव्य परम्परा को नई दिशा भी देते हैं।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:-

1. अभिराजराजेन्द्रविरचिता,पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-37
2. अभिराजराजेन्द्रविरचिता,पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-38
3. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, अभिराजसहस्रकम्, हिमाचलशतकम्,श्लोक-5
4. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-52
5. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र, शतकपञ्चदशी, रुद्राक्षशतकम्,श्लोक-8
6. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, विमानयात्राशतकम्,श्लोक-52
7. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-97
8. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र, शतकपञ्चदशी, वरदेश्वरशतकम्,श्लोक-40
9. अभिराजराजेन्द्रविरचिता,पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-107
10. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, अभिराजसहस्रकम्, वैशालीशतकम्,श्लोक-79
11. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र, शतकपञ्चदशी, निमिपालशतकम्,श्लोक-127
12. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-124
13. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, बालीप्रत्यभिज्ञानशतकम्,श्लोक-79
14. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र, शतकपञ्चदशी, वरदेश्वरशतकम्,श्लोक-51
15. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्र, शतकपञ्चदशी, निमिपालशतकम्,श्लोक-33
16. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, अभिराजसहस्रकम्, वैशालीशतकम्,श्लोक-22
17. मिश्रोऽभिराजराजेन्द्रः, अभिराजसहस्रकम्, धारामाण्डवीयम्,श्लोक-50
18. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, देववाणीहुङ्कारशतकम्,श्लोक-34
19. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, देववाणीहुङ्कारशतकम्,श्लोक-4
20. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, देववाणीहुङ्कारशतकम्,श्लोक-5
21. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, देववाणीहुङ्कारशतकम्, श्लोक-55
22. अभिराजराजेन्द्रविरचिता, पञ्चकुल्या, देववाणीहुङ्कारशतकम्, श्लोक-56